नवीन समाज के निर्माता थे प्रजापिता ब्रह्मा

प्रत्येक महापुरूषों का एक महान लक्ष्य होता है। यह लक्ष्य समस्त मानव जाति को सुख, समृद्धि, शान्ति, प्यार और सद्भाव प्रदान करता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का व्यक्तित्व भी आदिपुरूषों के रूप में शुमार है, वे नवीन युग के हिमायती थे। मानवता का दीपक जलाने वाली भारतीय संस्कृति विश्व में अपनायी जाने वाली सभी संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने लोगों के अन्दर छिपे मानवीय गुणों और भारतीय संस्कृति के सनातन सत्य को जगाने की पूरे विश्व में भरपूर पहल की। उनका लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना था, जिसमें सभी मानव को जाति कीचड़ में फंसाने वाले अवगुणों से मुक्त हो सदगुण धारण कर सुगन्धित पुष्प बन सके। साधारण नारी को शक्ति स्वरूप दुर्गा बन, बुराईयों का नाश करने तथा पुरूष को हनुमान तथा मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम तुल्य बन आसुरी प्रवृत्तियों को नाश कर दैवीगुणधारी बनने की प्रेरणा दी।

धर्म और जाति से उपर उठते हुए बाबा ने मनुष्यों के अन्दर छिपे मानवता का दीपक जलाया तथा आध्यात्मिक रोशनी प्रदान की। बाबा की नजर में कोई भी मनुष्य किसी का दुश्मन नहीं था। उनका सदा यही संदेश था कि अपने अन्दर छिपे दुश्मनों को पहिचानों और उसका संहार करो तभी इस संसार से आतंकवाद और हिंसा सफाया होगा। वे एक ऐसा नवीन समाज बनाना चाहते थे जहाँ रामराज्य की संकल्पना साकार हो सके। उन्होंने ईश्वरीय मर्यादाओं व शक्तियों को जीवन में आत्मसात् करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहे। एक ऐसे युग की नींव रखी जो आने वाले समय में नया सवेरा के रूप में उदित होगा। बाबा ने किसी भी व्यक्ति के अवगुणों को कभी नहीं देखा, सदगुणों को पहचान उन्हें प्रोत्साहन कर एक दिव्यगुणधारी बनने की ओर अग्रसर किया। कमजोर आत्माओं को शक्शिाली बनाने का साहस प्रदान किया। उन्होंने लोगों को ईश्वरीय संदेश भले ही दिया परन्तु अपने आप से कभी नहीं जोड़ा। उन्होंने सभी मनुष्यात्माओं को सीधे परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित कराया तथा उनकी मार्गदर्शना लेने की सलाह दी।

बाबा हमेशा कहते थे कि मनुष्य की मत मनुष्य को दुख भी पहुंचा सकती है, परन्तु ईश्वर की मत केवल सुखदायी पथ की अनुगामी बनाती है। जो व्यक्ति खेवनहार ईश्वर की नाव पर सवार होता है उसकी नैया कभी नहीं डूबती और वह जीवन के इस खेल में सकुशल उत्तीर्ण होकर परमात्म दूत बनता है। बाबा के इस संदेश ने लोगों के जीवन सकारात्मक ऊर्जा के प्रकाश पुंज को प्रस्फुटित किया। यहीं से एक नवीन समाज की स्थापना की क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने पुरूष के साथ-साथ प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाने के लिए त्याग और तपस्या की अलख जगायी। उनका संदेश था कि प्रकृति और पुरूष जब दोनो सतोप्रधान होंगे तभी सूखी जीवन का आनन्द ले सकेंगे और वही स्वर्णिम युग कहलाने योग्य होगा। पर्यावरण को पूर्ण रूपेण सुरक्षित रखना तथा उनके महत्व को समझाना बाबा के व्यक्तित्व में शुमार था।

बाबा ने स्थूल पद, पोजीशन को ज्यादा महत्व न देकर आध्यात्मिक शक्ति के सहारे आत्मिक स्वमान के पोजीशन को बनाये रखने की सलाह दी। मनुष्य जब आत्मिक रूप से सशक्त होगा तभी वह समाज में श्रेष्ठता हासिल कर पायेगा। उसका कोई भी दुश्मन नहीं होगा, सभी उसके सहयोगी और अपने होंगे। व्यवाहारिक ज्ञान में पारदर्शिता तथा कर्मों की गहन गति को ध्यान में रखते हुए मनुष्य को किये गये

कर्मों का प्रतिदिन आंकलन करना चाहिए। इससे ही मनुष्य की सतत् उन्नति हो सकती है। राजनीतिक, आर्थिक, समाजिक और बौद्धिक विकास के लिए आध्यात्मिक शक्ति ही सर्वोपरि विधि है। वर्तमान समाज के आध्यात्मिक शक्ति का क्षरण ही समस्याओं की जड़ है।

ऐसी महान विभूति का जन्म सन् 1876 में हैदराबाद सिन्ध (पाकिस्तान में है) में एक साधारण और धर्मपरायण परिवार में हुआ। इनके बचपन का नाम लेखराज था। इनके दयालु स्वभाव तथा सर्वहिताय भाव होने के कारण लोग इन्हें प्यार से दादा कहते थे। बचपन में इनके सर से माँ का साया उठ गया। वे बड़े होकर हीरे जवाहरात के व्यापार करने लगे तथा अपनी कार्यकुशलता के बदौलत वे शिघ्र ही सुप्रसिद्ध जौहरी हो गये। उनकी ख्याति जौहरी के रूप में कम प्रभावशाली और सज्जनता में ज्यादा विख्यात हुई। लोगों को इनके व्यक्तित्व में राजायी स्वभाव झलकता था। कई बार मिलने वाले राजा भी कहते कि वास्तव में राजा आप को होना चाहिए। साठ साल की उम्र में दादा के जीवन में एक महान परिवर्तन आया। ईश्वरीय शक्ति द्वारा पुरानी दुनियां का महाविनाश तथा स्वर्णिम समाज की स्थापना का साक्षात्कार हुआ। इसके पश्चात ईश्वरीय शक्ति के निर्देशन में उन्होंने मताओं बहनों को अग्रणी बनाते हुए एक ट्रस्ट की स्थापना कर आध्यात्मिक क्रान्ति का श्रीगणेश किया।

प्रारम्भिक अवस्था में इस संस्था का नाम ओम् मण्डली रखा गया। भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद यह संस्था सन् 1950 में ऋषियों तपस्वियों की तपोस्थली माउण्ट आबू, राजस्थान आयी। धवल वस्त्रधारिणी बहनें सरस्वती तथा शीतला बन लोगों को मानवता की सेवा करने के लिए इस महान कार्य में अपना सर्वस्व जीवन समर्पण कर ईश्वरीय सेवाओं में संलग्न हो गयी। बाबा ने पूरे विश्व में ईश्वरीय संदेश देने के लिए देश-विदेश में आध्यात्मिक शंखनाद करने के लिए प्रेरित किया। बाबा ने त्याग तपस्या करते हुए स्वयं को सम्पूर्ण पवित्रता को प्राप्त कर फरिश्ता बन 18 जनवरी, 1969 को इस भौतिक शरीर का त्याग किया। ईश्वरीय मार्गदर्शना में बाबा ने इस संस्था की बागडोर माताओ-बहनों के हाथ में सौंपते हुए आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण तत्कालीन स्व. राजयोगिनी दादी प्रकाशणि को संस्था के नेतृत्व का दायित्व सौंपा।

बाबा आज साकार में नहीं है परन्तु उनकी सूक्ष्म प्रेरणा से आज भी लाखों लोगों के जीवन में नवीन युग की स्थापना के प्रति मार्गदर्शना कर रही है। 72 साल पूर्व बाबा ने जो नवीन युग की स्थापना का बीज बोया वह आज विशालता का रूप धारण कर चुका है। वर्तमान समय यह संस्था विश्व के 130 देशों में 8 हजार से भी अधिक सेवाकेन्द्रों के माध्यम से मानवता की सेवा में संलग्न है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस महान तिथि को **'विश्व शान्ति दिवस'** के रूप में मना रही है। इस दिन पूरे विश्व में लाखों लोग पूरे दिन मौन रहकर पूरे विश्व में सुख-शान्ति और खुशहाली की कामना करेंगे। इस पुण्य तिथि पर इस महान विभूति को शत्-शत् नमन।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com